Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 27 मई, 2021

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (IFSCA) ने 'निवेश कोष' के संबंध में एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया है। 'कोटक महिंद्रा परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनी लिमिटेड' के प्रबंध निदेशक नीलेश शाह की अध्यक्षता में गठित यह समिति अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र में निवेश संबंधी वित्तीय योजनाओं की रूपरेखा तैयार करने की सिफारिश करेगी। इस समिति में प्रौद्योगिकी, वितरण, कानूनी, अनुपालन और संचालन जैसे क्षेत्रों सहित समग्र फंड प्रबंधन पारिस्थितिकी तंत्र के प्रतिनिधि शामिल हैं।। यह समिति वैश्विक वित्तीय गतिविधियों की समग्र समीक्षा और उद्योगों की कार्ययोजना के बारे में सिफारिशें करने के लिये गठित की गई है। IFSCA की स्थापना अप्रैल 2020 में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण विधेयक, 2019 के तहत की गई थी। IFSC घरेलू अर्थव्यवस्था के अधिकार क्षेत्र से बाहर के ग्राहकों को आवश्यक सेवाएँ उपलब्ध कराता है। इसका मुख्यालय गांधीनगर (गुजरात) की 'गिफ्ट सिटी' में स्थित है। यह भारत में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (IFSC) में वित्तीय उत्पादों, वित्तीय सेवाओं और वित्तीय संस्थानों के विकास तथा विनियमन के लिये एक एकीकृत प्राधिकरण है। इसकी स्थापना IFSC में 'ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस' को बढ़ावा देने और एक विश्व स्तरीय नियामक वातावरण प्रदान करने के लिये की गई है।

नासा का नया 'अर्थ ऑब्ज़र्वेटरी सिस्टम'

नासा जलवायु परिवर्तन, आपदा शमन, वनाग्नि का मुकाबला करने और वास्तविक समय की कृषि प्रक्रियाओं में सुधार से संबंधित प्रयासों का मार्गदर्शन करने हेतु महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करने के लिये पृथ्वी-केंद्रित मिशनों को शुरू करेगा। इस नए 'अर्थ ऑब्ज़र्वेटरी सिस्टम' के तहत प्रत्येक उपग्रह को दूसरे उपग्रह के पूरक के रूप में विशिष्ट रूप से डिज़ाइन किया जाएगा, जो पृथ्वी की सतह से लेकर वायुमंडल तक का एक 3D एवं समग्र दृश्य प्रदान करने में सक्षम होगा। यह नई ऑब्ज़र्वेटरी 'नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज़, इंजीनियरिंग और मेडिसिन' (NASEM) द्वारा वर्ष 2017 में की गई सिफारिशों के आधार पर गठित की गई है, जिसके तहत महत्त्वाकांक्षी किंतु गंभीर रूप से आवश्यक अनुसंधान एवं अवलोकन पर ज़ोर दिया गया था। इस ऑब्ज़र्वेटरी का प्राथमिक लक्ष्य इस तथ्य का अध्ययन करना है कि एरोसोल वैश्विक ऊर्जा संतुलन को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है, जो कि जलवायु परिवर्तन संबंधी भविष्यवाणी में अनिश्चितता का एक प्रमुख स्रोत है। यह ऑब्ज़र्वेटरी सूखे का आकलन एवं पूर्वानुमान, कृषि हेतु पानी के उपयोग संबंधी योजना निर्माण के लिये आवश्यक तथ्य प्रदान करने के साथ-साथ प्राकृतिक आपदा प्रतिक्रिया का भी समर्थन करेगी।

अफ्रीकी वायलेट

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (IISER), भोपाल के वैज्ञानिकों ने मिज़ोरम में अफ्रीकी वायलेट के एक नए प्रकार की खोज की है। 'डिडिमोकार्पस विकिफिंकियाई' नामक यह नई प्रजाति वर्तमान में म्याँमार के साथ उत्तर-पूर्वी राज्यों की सीमा के पास केवल तीन स्थानों में ही मौजूद है और इसे एक लुप्तप्राय प्रजाति माना जाता है। यह एक एपिफाइट है यानी एक ऐसा पौधा जो पेड़ों पर उगता है और इसमें मानसून के दौरान हल्के गुलाबी रंग के फूल आते हैं। इस प्रजाति का नाम विख्यात वनस्पतिशास्त्री 'विकी एन फंक' के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने अमेरिका में स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूट में काम किया था। आमतौर पर 'अफ्रीकी वायलेट' के रूप में प्रसिद्ध प्रजाति 'डिडिमोकार्पस' मूल रूप से तंजानिया और केन्या से है और यह बागवानी के क्षेत्र में काफी लोकप्रिय है, जिसे प्रायः यूरोपीय देशों में घरेलू पौधे के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस खोज ने पूर्वोत्तर की पुष्प विविधता के महत्त्व और उसे संरक्षित करने की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

विश्व थायराइड दिवस

थायराइड के संबंध में जागरूकता बढ़ाने और इसके उपचार हेतु लोगों को शिक्षित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 25 मई को विश्व थायराइड दिवस का आयोजन किया जाता है। विश्व थायराइड दिवस की शुरुआत वर्ष 2008 में की गई थी। इस दिवस की स्थापना मुख्य रूप से थायराइड के नए उपचारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और शिक्षा तथा रोकथाम कार्यक्रमों की तत्काल आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करने के लिये विश्व स्तर पर अमेरिकन थायराइड एसोसिएशन (ATA) और यूरोपीय थायराइड एसोसिएशन (ETA) के नेतृत्त्व में चल रहे अभियान के एक हिस्से के रूप में की गई थी। थायराइड ग्रंथि, गर्दन के सामने वाले हिस्से में पाई जाती है। आँकड़ों के अनुसार, प्रत्येक 10वाँ वयस्क हाइपोथायरॉयडिज़्म (Typothyroidism) रोग से ग्रसित है, इस रोग में थायराइड ग्रंथि पर्याप्त थायराइड हार्मोन्स का उत्पादन नहीं कर पाती है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/rapid-fire-current-affairs-27-may-2021